मेरी प्यारी हिन्दी टीचर

मेरी प्यारी हिन्दी टीचर !
मेरी प्यारी हिन्दी टीचर !!

हर वक़्त वह रहती मुस्काती
बड़े प्यार से सबको समझातीं
अपने विषय में हैं वह बेजोड़
उनका नहीं है कहीं कोई तोड़
अच्छे से समझाने की ख़ातिर
विषय को देती जीवन से जोड़
समाधान हर एक मुश्किल का
चुटकी में सदा वह देती हैं कर

मेरी प्यारी हिन्दी टीचर !
मेरी प्यारी हिन्दी टीचर !!

रामायण महाभारत पढ़ातीं
अच्छी अच्छी बात बतातीं
अपनी संस्कृति से जुड़ने को
कितनी ही वह कथा सुनातीं
जीवन में सदा आगे बढ़ने को
कितने ही प्रेरक प्रसंग सुनातीं
सभी बच्चों को फिर वह कहतीं
अपने जीवन में कुछ अच्छा कर

मेरी प्यारी हिन्दी टीचर !
मेरी प्यारी हिन्दी टीचर !!

औरव त्यागी, सुपुत्र डॉ. सारिका मुकेश, तमिलनाडु

मैं हूँ भारत माँ का लाल

भारत माँ की शान हमेशा,
मैं हूँ भारत माँ का लाल।

शस्य श्यामला भारत-माता,
रखें हिमालय जिसे सभाँल।
सागर जिसके पाँव पखारे,
उसी देश का शौर्य कमाल।
भारत माँ की शान हमेशा,
मैं हूँ भारत माँ का लाल।।

वीर भरत मैं नचिकेता भी,
यम से भी जो करें सबाल।
वीर शिवा राणा भी मैं हूँ,
देश-शत्रु के जो है काल।
गद्दारों का काल सदा हूँ,
मैं हूँ भारत माँ का लाल।।

बंशज पवन-पुत्र के हम ही,
असुरों को करते बेहाल।
मैं भगत सिंह,आजाद बना,
कीर्ति अमर है सालों साल।
शौर्य-कथा भारत की रचता,
मैं हूँ भारत माँ का लाल।।
दुश्मन का मैं काल समय में,
बुरा करूँ मैं उनका हाल।
आँख दिखाये जो भारत को,
भुस भर दूँ
मैं उनकी खाल।
शीश चढाऊँ
सदा देश हित,
मैं हूँ भारत-माँ
का लाल।।

राज किशोर वाजपेयी अभय, ग्वालियर मो. 9425003616

चेहरा जनतंत्र का

धुंध इतनी बढ़ गई है कि
सूरज दिखता नहीं,
झूठ का बाज़ार देख
सच को ठिठुरते देखा।

सोने की परख तो
कसौटी से कर लेंगे
इंसान की परख कैसे करें हम?

संख्या के बल पर
तारे मना रहे जीत का जश्न
बेचारा चाँद दुबक कर रह गया।

पैंतीस की एकता पर
पैंसठ हार गया
अलग अलग खिचड़ी
जो उन्होंने पकाई
जनतंत्र के इस खेल को
बहुतों ने समझ ही नहीं पाया

निर्मल कुमार दे, जमशेदपुर

दीए की जिंदगी में हवाओं की ज़िद बर्दाश्त नहीं है

दीया जलता है
धीमी साँसों के साथ
हर लौ में
एक नाजुक उम्मीद रहती है
हवा की हर टकराहट
उसे हिला देती है
फिर भी
वह जलना नहीं छोड़ता
अंधेरे से
उसकी पुरानी दुश्मनी है
हर झोंका
एक परीक्षा बनकर आता है
पर दीया
मौन रहकर सहता है
उसकी रोशनी
कमजोर नहीं होती
बस थोड़ा
काँप जाती है
फिर भी
वह उजाला बाँटता रहता है
हवाओं की ज़िद
उसकी कहानी नहीं बदलती
क्योंकि
रोशनी का स्वभाव ही संघर्ष है

डॉ अशोक पटना बिहार

वीर बैसाखी

स्वनाम धन्य है अमृतसर
नानक की धरा ,अमृत है भरा
इक ऊंकार हर जुबान पर रहे
सेवा का व्रत सबने है लिया
हिंदुस्तान की आजादी थी धर्म
खेत -खलिहान, गली -मोहल्ला
युवा सा जोश उम्र का नाम होश
1919 की बैसाखी ने रचा इतिहास
पंज दरिया की? धरा खून से नहाई
जलियांवाला बाग कुर्बानियों की दुहाई
जनरल डायर ने निहत्थों को भूना
अंग्रेजों? ने बदले के लिए मासूमों को चुना
अंधे बहरे? कानून ने गजब हिंसा दिखाई
घेरा गुरू के सेवकों को हुआ पीठ पर वार
मिनटों में? हुई गोलियों की अंधाधुंध बरसात
बालक, वृद्ध, सुखमन भाई-बहन थे दंग
सभी रास्ते? किये आततायियों ने बंद
कभी ना भूलें आजाद भारत खून की होली
शरीर ,आत्मा ,मन प्राण झेल रहे दनदनाती गोली
जलियांवाला बाग, स्वर्ण मंदिर कहे कहानी
हिंदूस्तान की आजादी में अमृतसर की जुबांनी
कायर जनरल?? की क्रुरता का वो?? खेला
लील गया मासूम दिलों से बैसाखी का मेला
शहीद स्मारक करें हम स्मरण सदा
?नमन करें हर नाम को जो वहाँ खुदा
तिरंगे की आश बान शान है जलियांवाला बाग
स्वनाम धन्य? है अमृतसर
नानक की धरा
अमृत है भरा।

डॉ.नीना छिब्बर जोधपुर 9461029319

मोबाईल को थोडा आराम दो!

माँ
मेरे साथ खेलने
का आनंद लो ना
माँ मोबाईल को
थोडा आराम दो ना!
माँ बहुत जोरों की
भूख लगी है
तुम्हारे हाथ से
बना स्वादिष्ट भोजन
खाने को दो ना
माँ
मोबाईल को थोडा आराम दो ना!
माँ
बहुत दिन बित गए
तुम्हारी मीठी
आवाज सुनने को,
तुम्हारी डाट फटकार सुने
लंबा समय बित गया
माँ आपका किमती समय मेरे
साथ बिताओ ना
माँ मोबाईल को थोडा आराम दो ना!
माँ
बहुत दिन से
अच्छी नींद नहीं आई
कोई अच्छी-सी लोरी
रामायण -महाभारत की
कहानी सुनाओ
ना,
माँ
मोबाईल को थोडा आराम दो ना!

दगा पाटील हिंदी अध्यापक, सहकार विदया मंदिर बुलढाणा (महाराष्ट्र)

समय से बड़ा न कोई धन, न कोई वरदान,

इसी से बनती है जीवन की हर पहचान।
जो इसे समझ गया, वही आगे निकल गया,
जो इसे खो बैठा, वो पीछे ही रह गया।
हर पल की कीमत को पहचान ले ज़रा,
ये लौटकर नहीं आता, मान ले ज़रा।
घड़ी की हर टिक-टिक संदेश सुनाती है,
समय ही जीवन की सच्चाई बताती है।
आज जो समय को यूँ ही गँवा रहा है,
कल वही अपनी किस्मत पर पछताएगा।
जो हर पल को मेहनत में ढाल देता है,
वही अपनी मंज़िल को पा लेता है।
ना कल का भरोसा, ना बीते का सहारा,
जो है बस यही पल, यही सबसे प्यारा।
समय न रुका है, न कभी रुकेगा,
ये अपने नियम से सदा ही चलेगा।
तू चाहे तो इसे अपना साथी बना ले,
या यूँ ही इसे खोकर खुद को सज़ा दे।
आज का सही उपयोग ही कल बनाएगा,
यही तुझे सफलता के शिखर तक ले जाएगा।

...दयाराम साहू ग्राम-डौकाबांधा (बंजारी) जिला-कबीरधाम (छत्तीसगढ़)

तुमसे मोहब्बत चाहिए मुझको
तुमसे मोहब्बत चाहिए मुझको।
नहीं तुमसे दौलत, चाहिए मुझको।।
बाकी सब मेरे पास है साथी।
सच्चा तुम्हारा साथ चाहिए मुझको।।
तुमसे मोहब्बत चाहिए---------------।।
सब रंग देखें है, जिंदगी के मैंने।
सब कुछ पाया है, जिंदगी में मैंने।।
फिर भी सुकून, नहीं किसी से मिला।
दिल की खुशी, तुमसे चाहिए मुझको।।
तुमसे मोहब्बत चाहिए---------------।।
सच बोलने की सजा, मुझको मिली है।
सबसे बेवफ़ाई यहाँ, मुझको मिली है।।
सबने उठाया, मेरी शराफत का फायदा।
तुम्हारी वफ़ा हमेशा, चाहिए मुझको।।
तुमसे मोहब्बत चाहिए---------------।।
कमा लूंगा दौलत तो, बहुत जिंदगी में।
बना लूँगा महल भी मैं, मेरी जिंदगी में।।
मगर मेरे जैसा ही हो,सपना तुम्हारा।
मुझसी पसंद तुम्हारी, चाहिए मुझको।
तुमसे मोहब्बत चाहिए---------------।।

गुरुदीन वर्मा उर्फ़ जी.आज़ाद तहसील एवं जिला-बारां(राजस्थान)

पूनम की रात

चुपचाप बैठा
पूनम की रात में
छत पर अकेला
चांद को निहार रहा था मैं...
चारों तरफ शांति ही शांति
श्वेत चादर फैली थी आकाश में
मदमस्त चांद
और ठंडी मलय समीर
घायल कर रही थी
मेरा हृदय !
विचार रूपी नौका
मन रूपी सागर में तैर रही थी
भावुकता के तट से टकराकर
हृदय में एक अजीब सी सिहरन दौड़ रही थी ।
मैं स्वयं से मुक्त महसूस कर रहा था
एक असीम शांति मिली
जब फिजूल के विचार मिटे
मैं तन्हाई में भी सुकून का एहसास कर रहा था
चुपचाप बैठा...

- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा ग्राम रिहावली, तारौली गूजर, फतेहाबाद, आगरा, उत्तर प्रदेश 283111, 9627912535

बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर

संविधान के जनक,अंबेडकर थे महान,
अस्पृश्यता किए दूर,जग में मिला सम्मान।
शिक्षित संगठित करके, जनता को दी आवाज,
डॉ भीमराव अंबेडकर की , जयंती को पूजे आज।
न्याय पथ पे सवार हुए, अन्याय के खिलाफ भरी हुंकार,
जातिविहीन समाज से, बदलाव का आया विचार।
समाज के बने मसीहा, दूर की अस्पृश्यता भावना,
एक सशक्त देश बने, डॉ आंबेडकर देखे सपना।
शिक्षित बनो संगठित रहो, संघर्ष करो का दिया नारा,
खत्म कर दी रूढ़िवादी, जग में फैलाएं भाईचारा।
जातिवाद से दी मुक्ति, नागरिकों को दिलाई हक,
दलितों वंचितों को दे न्याय, धर्म कर्म से बने सेवक।
भारत के संविधान, सर्वप्रथम बने निर्माता,
इतिहास के युग पुरुष,जनता के अंबेडकर चहेता।
बाबा साहेब के नाम से, जनता के थे लोकप्रिय,
प्रथम कानून मंत्री से, संविधान आधार का श्रेय।
भारतीय बहुज्ञ विधिवेत्ता, अर्थशास्त्रीय राजनीतिक के लेखक,
दलित बौद्ध आंदोलन से, बन गए समाज सुधारक।
हिंदू धर्म में व्याप्त कुरीति, दूर की छुआछूत की प्रथा,
दलितों के बनके मसीहा,करोड़ो जनता के प्रेरणा गाए गाथा।
महार समुदाय में जन्मे, भीषण सामाजिक अपमान सहे,
स्कूल में भेदभाव मिले, तमाम तकलीफ सह कर चले।
शोषित वंचितों के अधिकार, समानता न्याय की गूंजी आवाज,
एक निडर समाज सुधारक, डॉ भीमराव अंबेडकर पर है नाज।

नरेश कुमार दुबे सरायपाली जिला महासमुंद छत्तीसगढ़

गर्मी का मौसम

गर्मी का मौसम है
गरीबों का मौसम है।
ठंडी और वर्षा से
अच्छा ये मौसम है।

पेडों की छांव में
दिन को बिताया ।
रातों को जी भर
नीद सुख की सोया ।

गर्मी में कम खाना
सभी लोग खाते है ।
गरीब एक समय पानी
पीकर गुजारा करते है ।

ग़रीबों को देखो
गरीबी में रहते ।
पंखा न कूलर
कभी घर में न होते ।

गर्मी पड़े या
पड़े धूप तपती ।
पेडों की छांव में
दोपहरी कटती ।

दिन और रातें
करे नित बसेरा ।
खुशियों की रातें
खुशी का सबेरा ।

जिन्दगी है कटती
वही पर सुहानी ।
देखो है उनकी
यही जिंदगानी ।

गर्मी का मौसम
गरीबों का मौसम ।
ठंडी और बरसा से
अच्छा ये मौसम ।

डा अनन्तराम चौबे अनन्त, जबलपुर /

तुम्हारा प्रेम भी...

तेरे करीब रहने से
अब सुकून कुछ ज्यादा है
मेरे दिल के पन्नों पे आज कल
प्यार कुछ ज्यादा है

तस्वीर रोज़ देखता हूं मैं तेरा
पर अब पास आकर
तेरी रूह को छूकर
तुझे अपने दिल में
बसाने का इरादा है

चांद को देख सकते हैं
मगर पा नहीं सकते
आसमां को निहार सकते हैं
मगर छू नहीं सकते
हवा को महसूस कर सकते हैं
मगर बांध नहीं सकते

चांद, आसमां, और हवा
सब अनागत हैज
और मेरे लिए
तुम्हारा प्रेम भी...!
मनोज शाह मानस

नारायणा गांव, नई दिल्ली मो.नं.7982510985

उल्टी बात समझ आएगी

षड्यंत्रों की फ़सल उगाओ,
घूम-घूम कर आग लगाओ।
चिर संकट के तुम संवाहक,
जितनी चाहो गदर मचाओ।
तुम जामाता हो सरकारी।।
विष का वमन करो प्याली में,
खा कर छेद करो थाली में।
अपनी मर्ज़ी के हो मालिक,
गिरो गटर में या नाली में।
मुल्क़ तुम्हारा है आभारी।।
काई तुम हो कीच तुम्ही हो,
उच्च कोटि के नीच तुम्ही हो।
सदियों बाद सुधर ना पाए,
कालनेमि, मारीच तुम्ही हो।
विध्वंसक, विकृत, व्यभिचारी।।
कपट, कुटिलता सब बस में है,
द्रोह तुम्हारी नस-नस में है।
÷गुल्ले÷ साबित हुए सदा ही,
मगर वजूद सदा रस में है।
पोर-पोर में है मक्क़ारी।।
हर तारक के तुम मारक हो,
मानवता के संहारक हो।
विस्तारक हो हर विवाद के,
सकल जगत के संक्रामक हो।
तुम चलती-फिरती बीमारी।।
निपट गँवार महा ख़ैराती,
बारह मास बने बाराती।
बस कृतघ्नता पर गर्वित हो,
निज कृत्यों पर लाज न आती।
नंगे परमेश्वर पर भारी।।
रग़-रग़ में विष एक बसा है,
निज कपाल पर क़फ़न कसा है।
बंद पिटारी के भुजंग तुम,
जिसने पाला उसे डसा है।
तुम हो एक कृपाण दुधारी।।

प्रणय प्रभात, श्योपुर देश)

जीवन का छंद

मैं जीवन का
छंद
गुनगुना रहा हूँ
मैं जीवन-रस का
प्याला
पी रहा हूँ
मैं अपने हृदय में
फूलों का घर
बना रहा हूँ
मैं अपने मन में
मानसरोवर
लहरा रहा हूँ
मैं अपने प्रेम की
देहरी पर
आरती का दीया
जला रहा हूँ

-दुर्गाप्रसाद झाला

गीतिका

लगता है अभावों में जाएगी जिंदगी
ख्वाहिशों ख्वाबों में जाएगी जिंदगी
सवालों का सैलाब है हर निगाह में
निरर्थक जवाबों में जाएगी जिंदगी
पैबंद लगी पैंट,कॉलर फटी कमीज
चीथड़ा जुराबों में जाएगी जिंदगी
निर्णय की आजादी नसीब में नहीं
अनचाहे दबावों में जाएगी जिंदगी
दहेज बेटी के लिए,बेटे को रोजगार
ऐसे ही तनावों में जाएगी जिंदगी
भूख का जब तक चलेगा
सिलसिला
बनिए की किताबों में जाएगी जिंदगी
जीवन में सभी को करना पड़ेगा
खुश
तन मन के चढ़ावों में जाएगी जिंदगी

डॉ पुनीत कुमार मुरादाबाद 244001

दुर्गम पथ

जहाँ धरा भी प्रश्नों में ढल जाती है,
गगन की नीलिमा भी मचल जाती है,
मैं उसी दुर्गम राह पर खड़ी हूँ–
जहाँ हर दिशा खुद से ही डर जाती है।

यह पथ संकेतों से नहीं चलता है,
यहाँ अर्थ स्वयं ही पल-पल ढलता है,
पत्थर भी केवल बाधा नहीं रहते–
हर आघात समय का स्वर बनता है।

न यश की चाह, न कोई अभिलाषा,
बस मन में थी एक मौन-सी आशा,
जो खींच लाई इस अनजानी राह पर–
जहाँ रिक्तता भी बन जाती है भाषा।

हर कदम में एक अनकहा सवाल है,
हर सांस में कोई गहरा ख्याल है,
कभी मैं स्वयं से भी दूर लगूँ–
कभी यही पथ मेरा सच, मेरा हाल है।

यहाँ टूटना ही नया गढ़ना सिखाता है,
अहं का पतन ही सच दिखाता है,
जो बिखरता है भीतर बारंबार–
वही फिर खुद को निखार जाता है।

इच्छाएँ यहाँ चुपचाप मिट जाती हैं,
फिर नए अर्थों में जग जाती हैं,
जो बाहर शोर बनकर दौड़ी थीं–
वे भीतर आकर शांत हो जाती हैं।

यह पथ नहीं, मेरा अंतर-आकाश है,
जहाँ हर भ्रम का होता विनाश है,
हर डर यहाँ सच बनकर उभरता है–
और सत्य ही अंतिम प्रकाश है।

अब न भय है, न कोई अभिलाषा,
न विश्राम की कोई परिभाषा,
मैं बस चलती हूँ इस पथ पर–
यही बन गया जीवन की भाषा।

अब समझी
हूँ–यह अंत
नहीं है,
यह यात्रा कोई
बंधन नहीं है,
मैं ही पथ हूँ, मैं
ही पथिक–
और चलना ही मेरा जीवन सही है।

- रचना झा

हाइकु

1
मीठी लगती
पसीने की खुशबू
पकी फसल।
2
मीठे दो शब्द
मजदूरी का मूल्य
भीनी खुशबू
3
भली लगती
खुशबू प्यार की
ज्यों खिली जूही

निर्मल कुमार दे जमशेदपुर

ना उसका हूँ, ना तुम्हारा हूँ

दिल टूटने का कुछ अलग ही मज़ा है
क्यू टुटा वो शख्श क्यू छूटा
मैं तो मनाता रहा वो क्यू रूठा
किस बात की कमी रह गई
जो वो छोड़ उधर गई
हमने तो कभी उसका दिल दुखाया ही नहीं
उसे छोड़ किसी और का ख्याल दिल में कभी आया ही नहीं
उसकी हाँ में हाँ मिलता रहा
वो जहाँ बुलाती वहां जाता रहा
उसनें बोला इससे बातें ना करो उससे बातें ना करो
उसके खातिर नौकरी भी दाव पर लगाता रहा
मोहब्बत और बढ़ती जा रही थी,
उसे अपने दिल में और गहराई से बसाता रहा
हर पल उसके नखरे उठाना
बाबू सोना जान कह के उसे बुलाना
गर वो आंख दिखाती, उसकी आँखों में प्यार दिखता
मैं तो था प्यार में मुरख, प्यार बेशुमार दिखता
बस यही सोच,अपनी हरकतों पर मुस्कुराता हूँ
शायद वफादारी की मिली सजा है
दिल टूटने का कुछ अलग ही मज़ा है
अब न पागल हूँ ना आवारा हूँ
ना उसका हूँ ना तुम्हारा हूँ
ना हूँ किसी और का प्यारा अपने माँ बाप का प्यारा हूँ

अखिलेश सिखापुरी

राष्ट्रीय सुरक्षा मातृत्व दिवस

मां कितना करती है बच्चों से प्यार
वह हरगिज़ किसी से जताती नहीं।
औलाद की परवरिश हेतु मजदूरी करे
मगर वह कदाचित शर्माती भी नहीं।।
जिम्मेदारियों का बोझा सिर पे लिए
किन्तु मुश्किलों से कभी घबराती नहीं।
मां के लिए कोई छोटा या बड़ा लफ्ज़ नहीं
इसलिए माता पर लिखना आसान नहीं।।
मैया की फटकार में स्नेह छुपा होता है
अतः मेहतारी को समझना मुमकिन नहीं।
जननी के कदमों में जन्नत छिपी हुई है
ये राज जानने की हमारी औकात नहीं।।
राष्ट्रीय सुरक्षित मातृत्व दिवस पर हार्दिक बधाई

रामसेवक गुप्ता, मकराना राजस्थान

मैं कितना टूट रहा था

मैं कितना टूट रहा था हर बार उसे मनाने से,
वो कितना खुश था अब मेरे चुप हो जाने से।

बिखरते रिश्तों का जब उसको एहसास नहीं,
फिर क्या मिल जाता मुझको शोर मचाने से।

ये मत सोचो क्या खोया रिश्ते यार निभाने से,
कितना कुछ मैं सीख रहा हूँ यार ज़माने से।

तुम मरहम कर दो यारो, क्या होगा दर्द बताने से,
उसको क्या ही फ़र्क पड़ेगा मेरे ज़ख्म दिखाने से।

छोड़ दिया है हमने भी, क्या होगा अब समझाने से,
जो चला गया है वो अब लौटेगा नहीं बुलाने से।

वो चाँद सा रोशन जिसकी सब पर मेहर रहे,
दूर ही रहना 'संदीप', ऐसे दोस्त बनाने से।

संदीप अर्थला

दोहे

लगन लगी जब नेह की,आए नया निखार।
अमृत सा यह भाव है, निर्मल हुए विचार।।

अहंकार में चूर जो, मान कहीं ना पाय।
समय रहे यह त्याग दो,सीख भली समझाय।।

प्रयास यह अपना किया,मिला नहीं जब ठाँव।
छोड़-छाड़ हम आ गए, फिर से अपने गाँव।।

बादल सा उड़ता फिरू, मन में लिए हिलोर।
सेवा सबकी मैं करूं, बनकर सदा छिछोर।।

शिवलाल दाँगी,अध्यापक मोबा 8435408794

घर आँगन सूना हुआ

घर आँगन सूना हुआ , अलग हुआ परिवार ।
जहाँ गूँजते कहकहे , वहाँ आज दीवार ।।

घर आँगन सूना हुआ , सुता गई ससुराल ।
उसके मीठे बोल से , दिल अब तक बेहाल ।।

घर आँगन सूना हुआ , पिया गए परदेश ।
तड़प रही है विरहिणी , जैसे प्राण अशेष ।।

पवन तनय अग्रहरि अद्वितीय, शाहगंज , जौनपुर

बजट करेंगे पिलपिला

कैसी है देखो ये लोकतन्त्र में व्यवस्था सेट
20 करोड़ लोगों का भराता नहीं पूरा पेट
कर्ज लेकर भी खरीदती है सरकार देखो धान
फिर भी देशवासियों के पेट का रख नहीं पाते मान
वितरण की व्यवस्था बनाने वाले होते है कैसे नादान

एक विधायक के घर शादी में लाखों के पटाखों से होता धुंआ
पर आज़ादी के दशकों बाद भी तब के लक्ष्य को न छुआ
सरकारी गोदामों में करोड़ों का अन्न चट कर जाता है चूहा
या खबर आती हैं लाखों क्विंटल अनाज खराब हुआ
1रु किलो में देना है राशन,30 से 35 रुपए किलो उन्हें पड़ेगा
पर नहीं दे तो वो कैसे आकर वो चुनाव लड़ेगा
कब तक चलेगा यह सिलसिला देश के बजट को करेंगे पिलपिला।।

**- महेंद्र वत्स छापीहेड़ा,
जिला राजगढ़ 465689**